NH Debate – 47

"हरियाणा योद्धेय संस्कृति और औरत"

1) योद्धेयों के यहां औरत का पुनर्विवाह, विधवाविवाह दोनों होते आये, जबकि जो योद्धेयों को उनके एंटी-बताते हैं वो औरत को विधवा होने पर विधवा आश्रमों में भेजते हैं| हरिद्वार से शुरू हो जाईये और हुगली तक चले जाईये, शायद ही कोई शहर गंगा के घाटों पे ऐसा मिले जहां विधवा आश्रम ना हों| लेकिन योद्धेयों की धरती ऐसी धरती है जिस पर वृन्दावन को छोड़कर कहीं भी कोई विधवा आश्रम नहीं मिलता| हरियाणा योद्धेय संघ तो इस मत का है कि यह जो एक मात्र विधवा आश्रम प्राचीन हरियाणा की धरती पर है इसको भी बंद करवा के इसमें रहने वाली विधवाओं को उनके पतियों की सम्पत्ति का मालिकाना हक़ दे के उनको उनके अधिकार वापिस दिलवाए जाएँ|

2) योद्धेयों की धरती हरियाणा ही ऐसी धरती रही जहाँ योद्धेयों ने देवदासी जैसी कुप्रथा को कभी पाँव नहीं पसारने दिए| एक तरफ जहां आज भी दक्षिण भारत में येल्लमा तो कहीं देवदासी नाम से देवदासियां मिलती हैं, वहीँ योद्धेयों ने हरियाणा की धरती पर कभी भी औरत के साथ इस स्तर का घिनौना कुकृत्य नहीं होने दिया, अपितु ऐसे पाखंडियों और फंडियों के डेरे तक उखाड़ फेंकने का गौरवशाली इतिहास संजोये है यह मेरी योद्धेयों की प्राचीन हरियाणा की धरती|

3) योद्धेयों की धरती ने कभी सतीप्रथा को पनाह नहीं दी| जहां मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में आज भी इस प्रथा के होने की ख़बरें आती रहती हैं, वहीं मेरे हरियाणा की धरती के सूरवीर योद्धेयों ने कभी अपनी औरतों को सति होने का समर्थन नहीं किया और यही कारण है कि यहां सति-प्रथा का प्रभाव भी नगण्य रहा| एक तरफ जहां योद्धेयों के एंटी लोगों के बनाये राजाओं-महाराजाओं के यहां अधिकतर औरतें शाक्के और जौहर किया करती थी, वहीँ योद्धेयों की योद्धेयायें हजारों की संख्या में सेना की टुकड़ियां बना, दुश्मनों के दांत खट्टे करके मरना और मारना ज्यादा पसंद करती थी| और ये मीडिया के अधज्ञानी लोग कह देते हैं कि हमें बताओ हरियाणा में औरतों को कब इतिहास ने बराबरी का दर्जा दिया|

4) जहां देश का क़ानून तलाकशुदा औरतों के अधिकार के लिए आज 21वीं सदी में आके जाग रहा है, वहीँ मेरे हरियाणा के योद्धेय युगों पहले इतने आत्मीयता वाले थे कि तलाकशुदा औरत तक की आजीविका का क़ानून बना रखा था| जिसके तहत उसको साल में 9 मन अनाज, 2 जोड़ी जूती, कपडे और रहन-सहन का सारा खर्च उसका पहला पति उठाता था| पहले पति से हुए बच्चे/बच्चों का और

उन बच्चों का माँ के पास रहने की सूरत में लालन-पालन से ले शिक्षा तक का सारा खर्च पहले पति की कमाई से आता था|

जरा बताओ इन मीडिया वालों को जो हरियाणा में औरतों के मान-सम्मान को ढूंढते फिरते हैं वो देखें हरियाणा के मूल-निवासी योद्धेयों के यहां औरत का जो सम्मान रहा है, क्या दिखा देंगे ऐसा देश की किसी और प्रजाति के यहां? या उनके खुद के समाजों में ही दिखा दें?

हरियाणा के योद्धेयो सतर्क हो जाओ, विधवाओं को पुनर्विवाह की इजाजत की जगह विधवा-आश्रमों में भेजने वाले और देवदासियों को पालने वाली मति के लोग अब आपकी धरती में प्रवेश कर रहे हैं| ध्यान रहे कि यह लोग सिर्फ आजीविका कमाएं और शांति से रहें, लेकिन यह इनकी औरत के प्रति उपर्लिखित घिनौनी और गंदी मानसिकता को यहां ना फैलाने पाएं| औरत के मामले में हमें हमारे बुजुर्गों-पुरखों से भी स्वछंद मति का बनना है ना कि इनके प्रभाव में आके ऐसे बन जाएँ कि हमारे बुजुर्ग भी हमपे लज्जा करें|

Author: Phool Kumar Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 11/11/14